P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue- X* June -2016

आधुनिक युग में असुरक्षित होते बुजुर्ग : कारण और निवारण

जयप्रकाश नारायण
वरिष्ठ व्याख्याता,
संस्कृत विभाग,
राष्टोय संस्कृत संस्थान,
नई दिल्ली

सारांश

मानव शरीर बहुत ही भाग्य से मिलता है । तुलसीदास जी ने कहा है

'बड़े भाग मानुस तन पावा' ।
सुर दुर्लभ मुनि सन्तहि गावा ।।'[1]

मानव जीवन को चार आश्रमों में बाँटा गया है – ब्रह्मचर्य, गहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास । आयु के साथ क्रमशः प्रत्येक आश्रम में मानव का प्रवेश होता जाता है। वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में मानव सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों से धीरे धीरे विरत होकर ईश्वरोपासना में लग जाता था। वानप्रस्थियों को आज की भाषा में वरिष्ठ नागरिक या बुढ़ापा का आगमन कहा जा सकता है। इसे बुजुर्ग या बुढ़ापावस्था भी कह सकते हैं।

मुख्य शब्द : बुजुर्ग, वृद्धावस्था, वानप्रस्थ और सन्यास

प्रस्तावना

वृद्धावस्था को संस्कृत में 'जरा' कहते हैं। 'जरा' शब्द जृ धतु से अघ् प्रत्यय तथा टाप् प्रत्यय लगाकर सिद्ध होता है तथा इसका अर्थ है – शरीर का क्षीण होना। बुढ़ापा जिसे अंग्रेजी में । Geing कहते हैं। यह शरीर की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो जीवन का एक अविभाज्य अंग है। गीता में भी कहा गया है

देहिनोअस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्रा न मुह्यति ।।[2]

अर्थात् इस शरीर में कुमारावस्था, यौवन, बुढ़ापा और मृत्यु ये सभी अवस्थायें हैं। अतः धोरपुरुष इस विषय में शोक नहीं करता। परन्तु वृद्धावस्था में शरीर और इन्द्रियाँ क्षीण होने लगती है, अतः मनुष्य को भय लगना स्वाभाविक है। कठोपनिषद् के प्रारम्भ में नचिकेतोपाख्यान मे इस जरा भय का उल्लेख आया है।

स्वर्गे लोके न भयं कि×चनास्ति
न तत्रा त्वं न जरया बिभेति ।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे
शोकातिगो मोदते स्वर्गे लोके ।।[3]

नचिकेता अपने दूसरे वर में यमराज से उस स्वर्ग के साध्नभूत उपाय स्वर्ग्य अग्नि को जानना चाहता है, जहाँ जरा और मृत्यु का भय नहीं है।

वद्धावस्था में आँखों से दिखायी नहीं पड़ता, अन्य इन्द्रियाँ भी क्षीण हो जाती है, शरीर को जीवनी शक्ति घट जाती है, व्यक्ति दूसरों पर निर्भर होकर दीन बन जाता है, शरीर झुर्रियों से भर जाता है और देखने योग्य नहीं रहता, समीप आती मृत्यु का भय प्राणी को सताने लगता है। अतः अथर्ववेद का ऋषि सूर्यदेव से प्रार्थना करता है

जीवेम शरदः शतम् ।
पश्येम शरदः शतम् ।
भूयसी शरदः शतात् ।[4]

अर्थात् सौ वर्ष तक देखें, जीयें पोषित रहें, इत्यादि । बुजुर्ग वृद्धावस्था के परिवर्तनों और समस्याओं को तीन दृष्टियों से देखा जा सकता है – दैहिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक ।

दैहिक

बुजुर्ग अथवा वृद्धावस्था का सबसे पहला और सीध प्रभाव शरीर पर पड़ता है। शरीर की जीवनी शक्ति कम होने लगती है। पफलतः शरीर अपनी टूट पफूट की मरम्मत नहीं कर पाता । इस कारण उच्च रक्तचाप, महुमेह, हृदयरोग आदि अनेक रोगों और अक्षमताओं से मुक्त हो जाता है।

मनोवैज्ञानिक

बुढ़ापा के मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होत हैं। स्मरणशक्ति कमजोर हो जाती है। व्यक्ति को निराशा और अवसाद (Dipration) होने लगता हे। विषम परिस्थिति से समायोजन करने की, उत्तेजनापूर्ण अवस्थाओं में सन्तुलन करने की मन की शक्ति घट जाती है।

सामाजिक

उपर्युक्त दोनों परिस्थितियों का प्रभाव अनिवाय रूप से व्यक्ति की सामाजिक परिस्थितियों पर पड़ता है। शरीर के अक्षम होने से वह सामाजिक जीवन में सक्रिय नहीं रहता । अतः समाज में अनुपयोगी होने से उसका महत्त्व घट जाता है। वह दूसरों पर निर्भर हो जाता है। अतः उसके मनोबल, आत्मगौरव की भावना का हनन होता है। उसे अपना जीवन व्यर्थ तथा दूसरों पर बोझ लगने लगता है।

बुढ़ापा अभिशाप नहीं वरदान है, यह एक अत्यन्त शुभ प्रेरणादायी सकारात्मक सूत्रा वाक्य है जो वर्तमान समय की जीवन स्थितियों में उपयोगी और आवश्यक प्रतीत होता है।

बुढ़ापा जीवन यात्राा का अन्तिम पड़ाव है। इस पड़ाव तक आते आते व्यक्ति जीवन यात्राा के उतार चढ़ाव,उत्थान–पतन,हर्ष–विषाद, सुख–दुःख, मान–अपमान, सपफलता–असपफलता के विभिन्न अनुभवों से गुजरता है। उनका जीवन यहाँ पहुँचते पहुँचते कटु–मधुर अनुभवों, स्मृतियों, विचारों, आस्थाओं विश्वासों की एक स्वर्ण मंजूषा हो जाता है। जीवन की परिपक्वता तथा जीवन की परिपूर्णता का वह एक वरेण्य पात्रा होता है। अतः बुढ़ापा एक अर्थ में जीवनानुभवों तथा जगत् की स्मृतियों का एक विराट कोष है। बुढ़ापा अर्थवान तथा मूल्यवान जीवन यात्राा का एक कीर्तिमान है। वह अभिशाप नहीं है पर शर्त यह है कि व्यक्ति ने यह लम्बी बुढ़ापे तक की यात्राा किस प्रकार की है पूर्ण होश, पूर्ण जागृति, पूर्ण चेतना में या पिफर जीवन जीते रहने की एक अपरिहार्य विवशता के कभी एक बूढ़े आदमी के पास बुढ़ापे के अतिरिक्त कुछ नहीं होता और ऐसा बुढ़ापा कितना दुःखदायी त्रासद, पोड़ादायक होता है। यह उस बूढ़े व्यक्ति से ही पूछना चाहिये।

बुढ़ापे की दर्दशा पर किसी शायर ने कहा है

ए मौत तू जहाँ भी हो जल्दी आ ।
यहाँ ज़िन्दगी रोज़ मुझे ज़ार ज़ार करती है।।

उपरोक्त शेर जीवन से पराजित, हतोत्साहित निराशावादी व्यक्ति की जीवन–पीड़ा को अभिव्यक्त करता है पर यह जीवन की एक सच्चाई भी है। बुढ़ापा वरदान है या उसे अपने प्रयत्नों, इच्छाशक्ति, अभ्यास संकल्प से वरदान बनाया जा सकता है।

वार्ध्क्य, जीवन की एक ऐसी स्थिति है, जब व्यक्ति सारा जीवन परिश्रम करने के बाद, सहसा अपने आपको एकाकी, दूसरों पर अवलम्बित एवं शरीर बल से क्षीण होने के कारण असमर्थ पाने लगता है।

बूढ़ा या बुढ़ापा शब्द कानों में गूंजते ही एक विशेष तस्वीर हमारे सामने मानस पटल पर उभर कर आती है और वह है, एक जर्जर, लाचार, बीमार व खाट पर पड़ी जिन्दगी, कितनी वेदना है इन शब्दों मे जो बुरी तरह कचोटते हैं कि बूढ़ा कहने की अपेक्षा बुजुर्ग कहना बुढ़ापा का एक साम्य और शालीन चित्राण है ।

वस्तुतः वृद्ध का अर्थ है वर्धनशील, विकासशील एक वरिष्ठ नागरिक, ज्ञान और अनुभव का महाकोष जिसमें अनुभवों का व्यापक संचय और जीवन की विकट और विकराल समस्याओं के समाधन की समुचित क्षमता और दक्षता छिपी है।

गृहस्थ में वयोवृद्धों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हम आज जो भी हैं, अपने बुजुर्गों की अनुकम्पा से हैं। शारीरिक क्षमता घट जाने पर भी प्रभावी मानसिक स्थिति अपेक्षाकृत अध्कि परिष्कृत और परिपक्व होती है।

बुढ़ापे का वर्णन करते हुए कवि पद्म श्री डॉ. रमाकांत शुक्ल ने कहा है कि

सुस्वागतं भवतु ते, वार्ध्क ! नमो नमस्ते ।
अनुभवनिधन बन्धे, वार्ध्क ! नमो नमस्ते ।।[5]
दौर्बल्यमस्ति मे{ष्णोः, पश्यामि नो कुवृत्तम् ।
शमदमविधयकं त्वं !वार्ध्क ! नमोनमस्ते ।।[6]
पूर्वं मया कृतं यत् सर्वं निवेद्य प्रभवे ।
निश्चिन्ततां प्रपद्ये, वार्ध्क ! नमो नमस्ते ।।[7]
सौभाग्यवान् स प्राणी, यो जायते हि वृद्धः ।
शोच्यो भवेदवद्धो, वार्ध्क ! नमो नमस्ते ।।[8]
मा भूदकालवद्धो लोके कदापि कोखपि ।
कालक्षखिलाक्षस्तुवृद्धो,वार्ध्क !नमो नमस्ते ।।[9]

कोई भी उपाय या साधन वद्धावस्था को नहीं रोक सकता । धर्मग्रन्थों में वद्धावस्था के कष्ट को बतलाया गया है ।

वृद्धत्वं हि सदा कष्टं, कष्टं निर्ध्न जीवनम् ।
पुत्राशोकमहाकष्टंकष्टात् कष्टतमा क्षुध ।।[10]

इतना ही नहीं दुःख तब और बढ़ जाता है, जब बेटे बहु ही नहीं, नाती पोते भी उनकी उपेक्षा और उपहास कर बैठते हैं। सन्तान होने पर भी वृद्धजन सन्तान विहीन सा जीवन जीने को बाध्य होते हैं।

उपेक्षित बुढ़ापा झलना कष्टकर सिद्ध होता है, जैसे

वृद्धकाले मृताभार्या बन्धुहस्तगतं ध्नम् ।
भोजनं च पराधीनंनित्यं पुंसां विडम्बना ।।[11]

अर्थात् वृद्धावस्था में पत्नी की मृत्यु हो जाना, बन्धु बान्धवों सन्तान के हाथों में ध्न का चला जाना और भोजन की पराधीनता हो जाना एक बड़ी विडम्बना है। ऐसे दुर्दिनों में सभी परिजन यहाँ तक कि बेटा बेटी भी माता पिता का साथ छोड़ देती है। अतः मानसिकता को परिवर्तित व विकसित करने की आवश्यकता है। महाकवि भर्तृहरि ने अपने वैराग्य शतक में लिखा है कि वद्धावस्था एक हिंसक बाघिन है जो उम्र के ढलाव पर सामने खड़ी है। उस पर शत्राु रोगों के निरन्तर प्रहार हो रहे हैं। देह पूफटा घड़ा है और आयु पल पल रिस रही है – पानी की तरह । यह विडम्बना है कि मनुष्य नहीं समझ पाता जीवन के इस यथार्थ को ।

किसी कवि की कल्पना है

भोगेच्छा सब अस्त हुई, सम्मान मान सब नष्ट हुये ।
सब सहचर भी स्वर्गलोक गये कुछ मित्रा मृत्यु को जोह रहे ।।
नयन ज्योति भी नष्ट हुइले यष्टि हाथ में चलते है।
जर्जर देह हुई सारी पिफर भी मृत्यु से डरते हैं।।[12]

वृद्धत्व की स्थिति शक्ति, सौन्दर्य, सम्पत्ति और सम्मान का पराभाव है। इसीलिये इस अवस्था में पद, यश, पैसे, प्रतिष्ठा सब बोझ लगते हैं।

भर्तृहरि ने वैराग्यशतक में आगे कहा है

कालो न जातः वयमेव जाता,
भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा ।।[13]

बुढ़ापा अतीत है, सोचने से ज्यादा महसूस करना बुढ़ापा की विशेषता है। वृद्ध एक बेहद अकेली अक्षम और अनुपयोगी जिंदगी जीता है।

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। इस युग में भौतिक सुख–सुविधा एवं संसाधनों के प्रति समाज में मानव का आकर्षण बढ़ा है। फलतः अध्यात्म की अपेक्षा भौतिक जगत के प्रति सभी का झुकाव देखा जाता है। भारत परिवार प्रधान देश रहा है जिसमें संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन रहा है। इस कारण परिवार में बच्चों की परवरिश तथा बुजुर्गों का सम्मान एवं देखभाल प्रमुख होता था । बुजुर्गों के अनुभवपूर्ण निर्देशन में पूरा परिवार सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। परन्तु आधुनिक युग में पाश्चात्य प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार की अवधरणाओं का विखण्डन होता जा रहा है। जिस कारण परिवार के सभी अंग बच्चे, महिलायें, एवं बुजुर्ग भी असुरक्षित होते जा रहे हैं। बुजुर्गों को एकाकी जीवन अथवा वद्धाश्रम में शरण पाने या रोड पर भटकने को मजबूर होना पड़ रहा है। इसके बुजुर्ग ही नहीं हम भी असुरक्षित होते जा रहे हैं।

पत्नी के डर से विवश पुत्रा द्वारा पिता की उपेक्षा एवं उन्हें वद्धाश्रम में भेजने की योजना का मार्मिक विवेचन कवि मानिक चन्द त्रिवेदी की एकांकी 'अर्थो हि पुत्राः परकीय एव' में अच्छी तरह देखा जा सकता है –

शान्तिलाल और शान्ति द्वारा पुत्रा प्राप्ति हेतु किये गये तप के पश्चात् शिव के प्रसन्न होने पर पुत्रा प्राप्ति होती है, प्रसव पीड़ा से मरणासन्न शान्ति पति शान्तिलाल से दूसरा विवाह न करने तथा पुत्रा को माता पिता दोनों का प्यार देते हुये आधनिक शिक्षा प्रदान करने की वचन मृत्यु से पूर्व लेती है। शान्तिलाल पत्नी के वचन के अनुसार पुत्र को आधुनिक शिक्षा देकर अंग्रेजी का प्राध्यापक तथा अपने इच्छानुसार आधुनिक तथा पाश्चात्यानुगामिनी कन्या से विवाह करने की अनुमति देता है। बहू परम्परागत श्वसुर शान्तिलाल को घर का कंटक मानती है तथा उसे वद्धाश्रम छोड़ने के लिये पति शरद को मजबूर कर देती है। पुत्र के लिये सबकुछ परित्याग करने वाले वृद्ध पिता को जब बहु की मानसिकता का पता चलता है तो दुःखी होकर कह उठता है

'अर्थो हि पुत्राः परकीय एव' ।

पुत्रा ही सदा पराई होते हैं कन्या नहीं। इस भाव को व्यक्त करते हये लेखक घनश्याम मानिक चन्द्र त्रिवेदी ले बुढ़ापे में पुत्रा से होने वाले पीड़ा को व्यक्त करते हुये कहते है

हे आत्मार्थे कुशलाः कुटुम्बबध्रिा यौवने मदोद्धताश्च रे ।
हे अर्थे व्यवहारे च शून्यमनसः पाषाणरूपाश्च ये ।।[14]

(केवल) अपने स्वार्थ साधन में चतुर, परिवारजनों के प्रति बधिर, जवानी के नशे में चूर, परमार्थ तथा लोकव्यवहार के विषय में अनभिज्ञ, पत्थर की भांति । (संवेदनाहीन) ।

हे संपूर्णा व्यसने कुमित्रानिरता ये आत्मघातिनश्चरे ।
विजातीयरूपे रताश्च ये स्त्रोरूपलीला
अनधिकारे आत्मजास्तु पाषाणोक्ष्यं वरश्च रे ।।[15]

बुरी आदतों से घिरे हुये, बुरे मित्रों का सर्धैं करने वाले आत्मघाती विपरीत लिधैं के रूप में आसक्त, स्त्रियों की तरह आचरण करने वाले, अपने वश में नहीं रहने वाले जो पुत्रा हैं।, ;उनकी अपेक्षाद्ध पत्थर अच्छा ह।

हे वात्सल्येक्ष्नादरे पूर्णाः वाणीविवेके शून्याश्च रे ।
हे अवगुणागाराः आत्मजास्तु पाषाणोक्ष्यम् वरश्च रे ।।[16]

(माता पिता) की वात्सल्यभावना के प्रति अनादर का भाव रखने वाले शब्दा – शब्द विवेक से शून्य, दुर्गुणों के निवास स्थान जो पुत्रा हैं (उनकी अपेक्षा) पाषाण अच्छा है।

ताडयेत प×चवर्षाणि दशवर्षाणि त्रासयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रां कदापि स्वकीयं न गणयन्तु।।[17]

उपर्युक्त उद्धरण में एक वृद्ध पिता की अपने असहाय पुत्रा के प्रति भावना का मार्मिक चित्राण किया गया है कि किस प्रकार एक पुत्र पत्नी के सामने मजबूर होकर पिता की उपेक्षा कर देता है।

बुजुर्गों के असुरक्षा के मुख्य कारण

आश्रम व्यवस्था का पालन न करना

आश्रम व्यवस्था के अनुसार आयु के 50 वर्ष के बाद मनुष्य को वानप्रस्थ आश्रम को अपनाना चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में वे अपने पुत्रा–पौत्रा आदि के मोह के बन्ध्न में पड़े रहते हैं तथा उन्हें नहीं छोड़ना चाहते हैं। बाद में वही पुत्र–पौत्रादि बुजुर्गों को उपेक्षित करने लगते हैं। यही उनकी असुरक्षा का सबसे बड़ी समस्या है।

धन दौलत के प्रति आकर्षण

बुजुर्ग, अवस्था क्षीण हो जाने पर भी अपना ध्न दौलत अपने पास रखना चाहते हैं। लेकिन उनके सन्तान बलात् अपनाना चाहते हैं। फलतः यही सम्पत्ति उनकी असुरक्षा का कारण बन जाता है। प्रतिदिन दैनिक समाचार पत्रा में पढ़ते हैं कि धन सम्पत्ति के कारण पुत्रा–पुत्रो या सम्बन्धियों ने धन के लिए अपने बुजुर्ग की हत्या कर दी।

रूढ़िवादिता

बुजुर्ग और नयी पीढ़ी की सोच में कापफी 'गप' हो जाता है। फलतः बुजुर्गों को नयी पीढ़ी की आधुनिकता पसन्द नहीं आते जिस कारण वे बात–बात पर टोकते हैं जो नयी पीढ़ी को खटकता है। नयी पीढ़ी अपने ढंग से जीना चाहती है उन्हें बुजुर्गों का टोक–टाक परम्परा वादी लगता है। पफलतः वे बुजुर्गों की नहीं सुनते तथा उन्हें उपेक्षित करने लगते हैं।

घर में नयी बहु आधुनिक बहुद्ध का आना

पुत्रा कदाचित् लोक मर्यादा के कारण अपने बुजुर्ग माँ पिता का सम्मान तथा देखभाल करना चाहते हैं लेकिन आधुनिक बहु अपनी स्वतंत्राता में बुजुर्गों को बाधक मानती हैं। उनका लगाव केवल पति से होता है वे उन्हें (बुजुर्ग माँ–पिता को) वृद्धाश्रम भेजकर मुक्ति चाहती हैं या उन्हें अलग रहने को मजबूर कर देती है।

अत्यधिक महत्वाकांक्षा का होना

हर माँ–पिताजी अपने सन्तान को उफँची से उफँची शिक्षा प्रदान कर उफँचे पद पर देखना चाहते हैं। इसके लिए वे सन्तान को शिक्षा हेतु विदेश भी भेजने का

यत्न करते हैं बड़ी कठिनाई से धन इकठ्ठा कर उन्हें पढ़ाते हैं। लेकिन वही सन्तान जब उफँची शिक्षा प्राप्त कर अच्छे पद पर पहुँचते है तो उनके पास समयाभाव होता है या वे बहुत दूर विदेश में रहने लगते हैं तथा अपने साथ बुजुर्गों को नहीं रख पाते। पफलतः बुजुर्ग माँ पिता को अकेले ही जीवन व्यतीत करने को विवश होना पड़ता है। सन्तान चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते।

बुजुर्गों की स्वतंत्रा मानसिकता

कुछ बुजुर्ग शरीर के क्षीण होने पर भी अपने सन्तान के आश्रित नहीं होना चाहते हैं। पुत्राहीन होने पर पुत्राी के घर नहीं रहना चाहते क्योंकि भारतीय संस्कार के अनुसार वे पुत्रो के घर नहीं रह सकते। अतः उन्हें एकाकी जीवन जीने को विवश होना पड़ता है।

समाज में व्याप्त अनैतिकता

जो बुजुर्ग परिस्थितिवश अकेले रहने के लिए विवश होते हैं तथा उनके पास यदि अकूत सम्पत्ति ह तो अपराधी प्रवृत्ति के लोग उनकी हत्या कर उसे छीन लेना चाहते हैं इस कारण बुजुर्ग असुरक्षित हो जाते हैं।

काम–काजी महिला का होना

वर्तमान भौतिक युग में आर्थिक दबाव के कारण घर की महिलाएँ भी घर से बाहर रोजगार करने लगी हैं पफलतः बुजुर्गों को घर पर अकले समय बीताना पड़ता है। उन्हें पानी देने वाला भी नहीं मिलता। नौकरों में भी सेवा भाव का अभाव हो गया है। वे घर में अकेले बुजुर्ग को पाकर ध्न के लिए अपराध कर बेठते हैं । शिक्षित महिला घर में बैठे रहना नहीं चाहती है।

इस तरह के अनेक कारण हैं बुजुर्गो को असुरक्षित होने के। उनके निवारण के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं।

वानप्रस्थ आश्रम का पालन

बुजुर्ग यदि प्राचीन भारतीय आश्रम व्यवस्था के अनुसार वानप्रस्थ आश्रम के बारे में सोचना आरंभ करें तो बहुत से कारणों का निदान अपने आप हो जायेंगे तथा बुजुर्ग सुरक्षित हो जायेंगे। जैसे धन–दौलत तथा सन्तान के प्रति मोह आदि का समाधन स्वतः होने लगेगा।

नैतिकता की शिक्षा

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली से प्रभावित है। इस कारण नैतिकता का अभाव दीखता है।अतः शिक्षाप्रणाली में पुनः नैतिकता को जोड़कर सन्तान को अच्छी शिक्षा दी जा सकती है जिससे उनमें बुजुर्गों के प्रति आदरभाव एवं कर्तव्य बोध जागृत हो सके।

संयुक्त परिवार प्रथा

संयुक्त परिवार भारतीय समाज का मुख्य आधर रहा है जहाँ बुजुर्गों को पूरा सम्मान एवं उचित देखभाल संभव है। अतः एकल परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार की ओर सोच बढ़ानी होगी।

सन्तान का कर्तव्य

यदि सन्तान अपनी परिस्थिति से विवश है बुजुर्गों की देखभाल के लिए तो वे वद्धाश्रम या अन्य उपयुक्त सुरक्षित स्थान में उनकी व्यवस्था कर सकते हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक युग में बुजुर्गा को असुरक्षा के कारण का अध्ययन किया गया है और उसके निवारण के लिये सुझाव दिये गये है ।

निष्कर्ष

इस प्रकार अनेक उपाय हो सकते हैं बुजर्गों की सुरक्षा के लिए। उससे हम भी सुरक्षित महसूस करेंगे तथा बुजुर्ग भी। अतः हमें अपनी सोच बदलनी होगी। बुजुर्गों की सेवा से आयु विद्या यश और बल इन चारों की वृद्धि होती है ।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वद्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।
इति शम।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुढ़ापा अभिशाप नहीं, रामसहाय गोटेचा, पं. महादेव रामविलास पफड्या प्राण्यास मीढा (मारवाड़), 2013
2. आधुनिक संस्कृत साहित्य संचयन, सम्पादक – डॉ. गिरीश चन्द्र पंत, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2008
3. अर्थो हि पुत्राः परकीय एव, डॉ. माणिक चन्द त्रिवेदी, गुजरात
4. मम जननी (वार्ध्क! नमो नमस्ते!),डॉ. रमाकान्त शुक्ल, देववाणी परिषद्, दिल्ली, 2013